अखिलेश तिवारी

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

भावी योजना/रणनीतिक विकास योजना

1 से 11 पेज

Akhilesh Tiwari

1/11

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

भावी योजना/रणनीतिक विकास योजना

दृष्टि योजना और रणनीतियाँ

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के दीर्घकालिक विकास के व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते विश्वविद्यालय की दृष्टि योजना और विभिन्न रणनीतियों हुए विचार किया गया है। इसके माध्यम से , विश्वविद्यालय एक नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण , अनुसंधान और सामुदायिक जुड़ाव के अपने प्रमुख एजेंडे पर काम करना प्रारम्भ करता है।

विश्वविद्यालय एक नजर में

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की स्थापना एक राज्य विश्वविद्यालय के रूप में सन 1983 में की गई। यह एक आवासीय विश्वविद्यालय है, जिसका नाम अठारहवीं शताब्दी के सतनामी संत गुरु घासीदास के नाम पर रखा गया है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम , 2009 के तहत विश्वविद्यालय का उन्नयन केंद्रीय विश्वविद्यालय में किया गया । यह विश्वविद्यालय भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ और राष्ट्रमंडल विश्वविद्यालयों के संघ का एक सक्रिय सदस्य है। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) ने विश्वविद्यालय को बी ग्रेड के साथ मान्यता प्रदान की है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर शहर से लगा हुआ है। इस शहर को न्यायधानी (न्याय का शहर) एवं संस्कारधानी (संस्कृति का शहर) के नाम से जाना जाता है। बिलासपुर एक महानगरीय शहर है , जहां छत्तीसगढ का उच्च न्यायालय , दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे और दक्षिण पूर्वी कोलफील्ड्स लिमिटेड का मुख्यालय स्थित है। विश्वविद्यालय की यात्रा बिलासपुर शहर में अस्थायी भवनों में कुछ विभागों के साथ सहज रूप से प्रारंभ हुई। इसके बाद, इसे पुराने सैन्य बैरकों में स्थानांतरित कर दिया गया , जिसका निर्माण द्वितीय विश्व युद्ध के समय अरपा नदी के बाएं किनारे पर स्थित कोनी क्षेत्र में किया गया था। विश्वविद्यालय परिसर 656 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। प्रकृति ने परिसर को अतुलनीय सौन्दर्य, हरे-भरे क्षेत्रों और तालाबों व जल निकायों का अनुपम उपहार प्रदान किया है।

विश्वविद्यालय युवाओं को अवसर प्रदान करता है और ज्ञान की विभिन्न धाराओं के माध्यम से चरित्र निर्माण पर जोर देते हुए उनकी रचनात्मक प्रतिभा की उपलब्धि के लिए सुविधा प्रदान करता है। विश्वविद्यालय में 11 विद्यापीठों के अंतर्गत 32 स्थापित विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग (यूटीडी) शामिल हैं। इस विश्वविद्यालय में डिप्लोमा और स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के अलावा कई स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित है। इन सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से दिया जाता है।

प्रौद्योगिकी संस्थान (आईटी) में प्रवेश और प्रबंधन अध्ययन विभाग में क्रमशः अखिल भारतीय इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा (एआईईईई) और प्रबंधन योग्यता परीक्षा (एमएटी) के माध्यम से दिया जाता है।

छत्तीसगढ़, जो पूर्व में एक अविकसित क्षेत्र था, देश के सबसे तीव्र गति से विकास कर रहे राज्यों में से एक है। एक औद्योगिक केंद्र के रूप में , राज्य को कुशल जनशक्ति के बड़े समूह की आवश्यकता है। इस क्षेत्र के नागरिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करके इन अवसरों का बेहतर तरीके से दोहन कर सकते हैं। समकालीन

वैश्विक मानकों को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय ने शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया दोनों को बदलने के लिए व्यापक कदम उठाए हैं। शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए , विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर प्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्त किया है। विश्वविद्यालय एक आदर्श छात्र-शिक्षक अनुपात को पूरा करने के लिए भी प्रतिबद्ध है। हाल ही में 07 स्मार्ट क्लासरूम और 28 सेमी-स्मार्ट क्लासरूम विकसित किए गए है।

एक पारदर्शी और गतिशील मूल्यांकन प्रक्रिया, जहां आंतरिक मूल्यांकन की उत्तर-पुस्तिकाएं कक्षाओं में दिखाई जाती है, छात्रों को उनके प्रदर्शन में सुधार करने में मदद करती है। छात्र के सामर्थ्य के अधिकतम उपयोग के लिए , विश्वविद्यालय ने छात्रावास , कैफेटेरिया, व्यायामशाला, छात्र सुविधा केंद्र और वाई-फाई कनेक्टिविटी सहित अन्य उत्कृष्ट सुविधाएं मुहैया कराई है। अंग्रेजी बोलने , व्यक्तित्व विकास विभिन्न उपचारात्मक कक्षाओंऔर प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मुफ्त कोचिंग के माध्यम से , विश्वविद्यालय अधिकारों से वंचित अनुसूचित जाति , अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों को समान अवसर प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

छात्रों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए विशेष उपाय किए गए हैं। केंद्रीय ग्रंथालय में एक लाख चालीस हजार से अधिक पुस्तकें है और कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिकाओं और ई-पुस्तकों की सदस्यता ली गई है। केंद्रीय ग्रंथालय के अलावा, अधिकांश विभागों के अपने विभागीय पुस्तकालय हैं। परिसर और छात्रावासों में उत्कृष्ट खेल सुविधाएं उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय ने एक न ई व्यायामशाला का निर्माण कर खेल सुविधाओं के विस्तार की योजना बनाई है। गणतंत्र दिवस , स्वतंत्रता दिवस, स्थापना दिवस, शिक्षा दिवस, स्वामी विवेकानंद जयंती, सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती, शिक्षक दिवस, गुरु घासीदास जयंती आदि आयोजित करने के साथ-साथ पूरे वर्ष कई गतिविधियों का आयोजन परिसर को जीवंत बनाने के लिए किया जाता है।खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ, छात्रों को विश्वविद्यालय के सामाजिक सरोकार के कार्यों में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से , छात्र सहभागिता के साथ जीने का तरीका सीखना प्रारंभ करते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नए विचारों से छात्रों को अवगत कराने के लिए अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विश्वविद्यालय के शिक्षण विभाग व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए फील्डवर्क, औद्योगिक भ्रमण और शैक्षिक भ्रमण का आयोजन करते हैं। छात्रों में नेतृत्व के गुण पैदा करने के लिए , विश्वविद्यालय ने छात्र परिषद का सफलतापूर्वक गठन किया है। छात्र परिषद विश्वविद्यालय के सभी छात्रों का प्रतिनिधित्व करती है।

विकास की प्रक्रिया से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए , विश्वविद्यालय समुदाय ऊर्जा सुरक्षा , खाद्य सुरक्षा, जैव विविधता प्रबंधन , प्रदूषण प्रबंधन, वन प्रबंधन और विकास नीति सहित विभिन्न क्षेत्रों में गुणवत्ता अनुसंधान और विकास के माध्यम से वृहद समाज में योगदान करने के लिए तैयार है। यूजीसी मानव संसाधन विकास केंद्र कॉलेज , शिक्षकों और कर्मचारियों के क्षमता निर्माण के लिए नियमित रूप से उन्मुखीकरण और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, अल्पकालिक पाठ्यक्रम और कार्यशालाओं का आयोजन करता है। इन पाठ्यक्रमों के दौरान , विश्वविद्यालय के वरिष्ठ शिक्षकों और विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वालों की विशेषज्ञता का उपयोग किया जाता है।

आने वाले वर्षों में , विश्वविद्यालय का उद्देश्य केंद्रीय विश्वविद्यालयों के लिए एक रोल मॉडल के रूप में कार्य करना और साथ ही क्षेत्र में छात्रों की बढ़ती संख्या को एक शैक्षिक अवसर प्रदान करना है। विश्वविद्यालय ,राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के दोहरे लक्ष्यों "एक ज्ञान समाज की जरूरतों और अवसरों के लिए उच्च शिक्षा को अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए" और "समाज के सभी वर्गों के लिए उच्च शिक्षा को और अधिक सुलभ बनाने के लिए" को साकार करने की राह पर है।

दृष्टिकोण और उद्देश्य

दृष्टिकोण

18वीं शताब्दी के महान सतनामी संत, गुरु घासीदास के विचारों और शिक्षा से प्रेरित, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण की मदद से, सामाजिक सशक्तिकरण विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्गों के लिए के उत्थान लिए प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय का जोर गुणवत्ता सुनश्चयन के साथ विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के उभरते अंतरविषयक क्षेत्रों में नवीन शैक्षणिक कार्यक्रमों का संचालन और सुदृढ़ीकरण पर है ताकि विशेष रूप से विश्वविद्यालय के ज्ञान आधार और सामान्य रूप से शिक्षा के विकास में योगदान दिया जा सके। विश्वविद्यालय का उद्देश्य मूल्य-आधारित समग्र शिक्षा प्रदान करना है , जिससे मानव जाति की सेवा करने के लिए बेहतर ढंग से सुविधसम्पन्न समुदाय की वृद्धि और विकास हो सके।

उद्देश्य

विश्वविद्यालय के उद्देश्य इस प्रकार हैं-

शिक्षण और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान करके सीखने की ऐसी शाखाओं में उन्नत ज्ञान का प्रसार करना, जो इसके लिए उपयुक्त हो।

मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत पाठ्यक्रमों के लिए उनके शैक्षिक कार्यक्रमों में विशेष प्रावधान करना।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं अंतरविषयक अध्ययन एवं अनुसंधान में नवाचारों को प्रोत्साहित करने के लिए उचित उपाय करना।

देश के विकास के लिए जनशक्ति को शिक्षित और प्रशिक्षित करना; विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए उद्योगों के साथ संबंध स्थापित करना

लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ-साथ उनके बौद्धिक , शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास पर विशेष ध्यान देना।

प्रेरणास्त्रोत

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का नाम एक दूरदर्शी समाज सुधारक संत गुरु घासीदास (1756-1836) के नाम पर रखा गया है। गुरु घासीदास जी ने एक सामाजिक-धार्मिक संप्रदाय सतनाम पंथ की स्थापना की , जिसने समकालीन भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी और शोषण और वर्ण आधारित जाति व्यवस्था के खिलाफ खड़े होकर सामाजिक समानता की वकालत की। अपनी समग्र दृष्टि और व्यवस्थित सुधारों के साथ , गुरु घासीदास ने प्रचलित सामाजिक अन्याय और असमानता को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सतनाम पंथ का मानना है कि सत्य ही ईश्वर है और एक ही ईश्वर है , जो निराकार (निर्गुण) और अनंत है। विश्वविद्यालय परिसर में शराब और मांसाहारी भोजन के सेवन पर रोक लगाकर लोगों में व्यक्तिगत सुधार प्राप्त किया गया । गुरु घासीदास जी ने भी सिद्धांत बनाए, जो जीवों के प्रति उनके प्रेम और जानवरों के प्रति क्रूरता को समाप्त करने की उनकी अदम्य इच्छाशक्ति को दर्शाते हैं। सतनाम पंथ के अनुयायी सैकड़ों वर्षों से इन निर्देशों का पालन कर रहे हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में उन्नयन के बाद , विश्वविद्यालय द्वारा गुरुजी के दर्शन को वास्तविकता में बदलने के लिए कई कदम उठाए गए। अब , हमारा परिसर एक शराब और तंबाकू मुक्त परिसर है। जीवंत विश्वविद्यालय परिसर, जहां विविध जातियों, पंथों और वर्गों के छात्र पूरे भारत से एक साथ आते हैं , गुरुजी की शिक्षा के आधार पर एक समतावादी वातावरण प्रदान करता है।

आदर्श मूल्य

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में शैक्षणिक प्रक्रियाओं को निम्नलिखित आदर्श मूल्यों द्वारा संचालित किया जाता है, जो निर्धारित लक्ष्य एवं उद्देश्य प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय को विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के लिए व्यापक आधार तैयार करने में सक्षम बनाता है, जैसा कि अधिनियम में परिकल्पित है। आदर्श मूल्य भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप हैं।

1. **सृजनात्मकता:-** अकादमिक सत्यनिष्ठा और मानवीय गरिमा के अनुरुप चरित्र, क्षमता और सृजनात्मकता का विकास ।

2. **श्रेष्ठता** :- क्षेत्रीय/पारंपरिक ज्ञान और जनजातीय मूल्यों को बढ़ावा देने पर विशेष जोर देने के साथ ज्ञान और नवोन्मेष के माध्यम से ज्ञान और श्रेष्ठता का विकास।

3. **नवोन्मेष** :- उद्यमिता एवं नवोन्मेष की भावना का संचरण।

4. **वैज्ञानिक मनोवृत्ति और संवैधानिक मूल्य:** - वैज्ञानिक लोकाचार और लोकतांत्रिक मूल्यों को विकसित करना।

5. **वैश्विक नागरिकता** :- सहिष्णुता, सत्य, क्षमा और *"वसुधैव कुटुम्बकम"* जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करना।

6. **विविधता:** सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता के प्रति सम्मान पैदा करना।

7. **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता:** चिंतन एवं विचार की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन।

8. **समानता एवं समावेशन:** - शिक्षार्थी केंद्रित अकादमिक वातावरण विकसित करना और सुगमता,समानता एवं समावेशन का संवर्धन।

9. **देशभक्ति:** - शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय मूल्यों एवं अखंडता का अन्तःसंचरण।

10. **मूल्य आधारित शिक्षा:-** राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शैक्षणिक प्रयासों का संवर्धन।

11. **रणनीतिक योजना का आधार:** विश्वविद्यालय की क्षमता/ताकत, कमियां, अवसरों और चुनौतियों की पहचान करना।

12. **भारतीय ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देना** : नीतिपरक /नैतिक मूल्यों को स्थापित करना और शिक्षार्थियों को सामाजिक जुड़ाव के लिए तैयार करना।

विश्वविद्यालय के उपाधिधारकों की विशेषताएं

सिद्धि और ज्ञान	अंतर-व्यक्तिक विकास	व्यावसायिक और नैतिक विकास	सामाजिक जुड़ाव व राष्ट्रीय विकास
विशिष्ट क्षेत्र का अद्यतन ज्ञान एवं कौशल	व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा व ईमानदारी	संवैधानिक मूल्य, पर्यावरणीय मुद्दे, जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता	विविधता एवं समावेशन के प्रति संवेदनशीलता
अकादमिक क्षमता एवं बौद्धिक जिज्ञासा गहन सोच एवं विश्लेषणात्मक विश्लेषण	प्रभावी संचार टीम भावना का विकास	नैतिक मूल्यों के माध्यम से स्व-जागरूकता एवं आत्मचिंतन का प्रदर्शन	सामाजिक विकास के लिए प्रौद्योगिकी सक्षम उपयोग
वास्तविक दुनिया की समस्याओं को समझने में विश्लेषणात्मक और अनुसंधान कौशल	नेटवर्किंग एवं सहयोग समय एवं नेतृत्व प्रबंधन	व्यावसायिक एवं उद्यमशीलता के लिए स्थान 21वीं सदी के कौशल जैसे एआई ,आईसीटी, मशीन अधिगम का उपयोग	सतत विकास लक्ष्य एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य का प्रदर्शन
अंतरविषयक एवं समग्र दृष्टिकोण	अनवरत अधिगम		उपयुक्त प्रौद्योगिकियों की समझ और अनुप्रयोग
अनुभवात्मक अधिगम	परस्पर सम्मान, अनुकूलनशीलता और लचीलापन	बहु-विषयक ज्ञान का प्रदर्शन	
	मूल मानवीय मूल्यों का विकास	नवाचार के साथ शिक्षण और अनुसंधान को जोड़ना	

दृष्टिकोण, उद्देश्य एवं आदर्श मूल्य

अकादमिक प्रक्रिया

पाठ्यचर्या — पाठ्यसामग्री — पाठ्यचर्या की रूपरेखा

मूल्यांकन

रचनात्मक मूल्यांकन — सारांशित मूल्यांकन — समकक्ष मूल्यांकन — स्वमूल्यांकन — प्रतिपुष्टि

उपाधिधारकों की विशेषताएं

शिक्षण अनुसंधान

बहुविषयक सृजनात्मकता सहयोग समूहबद्धता

नवोन्मेष

मूल्यपरक (वैल्यू एडेड)
परिणाम पेटेंट प्रक्रिया

7/11

विश्वविद्यालय की क्षमता/ताकत, कमियाँ, अवसर और चुनौतियां

क्षमता/ताकत:

हमें संत गुरु घासीदास की शिक्षा और दर्शन से प्रेरणा मिलती है। यह हमारे दृष्टिकोण और उद्देश्यों में भी कुशलतापूर्वक उल्लेखित है , जिसके परिणामस्वरूप एक मूल्य-आधारित संस्थान का निर्माण हुआ है। यह क्षमता/ताकत विश्वविद्यालय के कामकाज के सभी पहलुओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

• योग्य, अनुभवी, प्रतिबद्ध और जुनूनी शिक्षक।

• सभी पाठ्यक्रमों के लिए औसत शिक्षक-छात्र अनुपात 1:17 है।

• रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों पर जोर देते हुए विविध प्रकार के पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है।

• विश्वविद्यालय के विभाग यूजीसी-एसएपी, डीएसटी-एफआईएसटी, डीबीटी-बिल्डर युक्त उत्कृष्टता केंद्रों में परिवर्तित हो रहे हैं एवं विशिष्ट क्षेत्रों में राष्ट्रीय त्वरक आधारित अनुसंधान केंद्र और लुप्तप्राय भाषाओं जैसे केंद्र स्थापित करने पर जोर दिया गया है।

• अनुकूल एवं परिणाम देने वाला अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र इनके द्वारा परिलक्षित होता है:

• शोध प्रकाशनों का औसत इम्पैक्ट फैक्टर, जो 2.5 है।

• संचालित अनुसंधान परियोजनाएं 20.

• प्रदत्त और/या जमा किए गए पेटेंटों की संख्या xxxx

• अनुसंधान, उद्योग, गैर-लाभकारी संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापनों (एमओयू) के माध्यम से सहयोग/नेटवर्किंग को सुदृढ़ करना।

• उन्नत भारत अभियान (यूबीए), राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) और एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) आदि के माध्यम से आगे बढ़ने के लिए मजबूत गतिविधियां।

• ऑनलाइन परीक्षा, मूल्यांकन, परिणामों की घोषणा, छात्र से संबंधित दस्तावेजीकरण के लिए ई-गवर्नेंस, प्रवेश और वित्तीय लेनदेन सहित प्रौद्योगिकी समर्थित ऑनलाइन शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियां ।

• एक पारदर्शी और गतिशील परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली स्थापित की गई है , जिसने पुनर्मूल्यांकन प्रणाली को समाप्त कर दिया।

• आधुनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए विभाग अत्याधुनिक भौतिक बुनियादी ढांचे से युक्त हैं।

• स्मार्ट क्लास रूम/सेमी स्मार्ट क्लासरूम और मजबूत ऑनलाइन शिक्षण अधिगम सुविधाएं स्थापित हैं और इनका उपयोग किया जा रहा है।

• शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों और शोध छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से डोमेन ज्ञान और कौशल का समय-समय पर अद्यतन ।

• विभिन्न खेल गतिविधियों में सीमित खेल अधोसंरचना और विशेषज्ञों के बावजूद , राष्ट्रीय स्तर पर खेल उपलब्धियों के मामले में उत्कृष्ट परिणाम।

• तेजी से बढ़ती शैक्षणिक सुविधाओं और बुनियादी ढांचे से विश्वविद्यालय के शैक्षणिक माहौल में उल्लेखनीय बदलाव आएगा।

• परिणाम परिणाम और उच्च अध्ययन के मामले में प्रभावशाली छात्र प्रगति दिखाई दे रही है।

• 650 एकड़ से भी ज्यादा हरा-भरा परिसर जिसमें प्रचुर मात्रा में वनस्पति और जीव हैं।

• मिश्रित मोड में सीखने के लिए अत्याधुनिक प्रेक्षागृह, ई-क्लासरूम, स्मार्ट क्लास रूम,सेमी स्मार्ट क्लास रूम, विशेष प्रयोगशालाएं सहित उत्कृष्ट शैक्षणिक अधोसंरचना।

• शिक्षार्थियों के लिए परिसर में निवास (छात्रावास),24 घंटे चिकित्सा केंद्र देखभाल (स्वास्थ्य केंद्र) , कैंटीन, मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रकोष्ठ और प्रभावी संरक्षक परामर्श कार्यक्रम जैसी उत्कृष्ट सुविधाएं।

• समावेशिता को प्रोत्साहित कर विश्वविद्यालय, समाज के कमजोर वर्गों की आवश्यकताओं को पूरी करता है।

कमियां :

• परियोजनाओं और कार्यक्रमों के तेजी से क्रियान्वयन के लिए प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए समय पर सुधार का अभाव।

• अनुभवात्मक और परियोजना आधारित अधिगम के लिए सीमित प्रयोगशाला एवं कार्यशाला अधोसंरचना की उपलब्धता।

• कम अकादमिक-उद्योग संपर्क एवं नियोजन गतिविधियों में सुधार की आवश्यकता।

• छात्रों को अधिक से अधिक स्टार्टअप और नवोन्मेष के लिए प्रेरित करने हेतु सीमित उद्भवन (इनक्यूबेशनल) और उद्यमशीलता गतिविधि।

• अंतरराष्ट्रीय छात्रों के नामांकन का अभाव।

• परामर्शी (कंसल्टेंसी) परियोजनाओं और कार्यक्रमों का अभाव।

• अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ शिक्षण और अनुसंधान में सहयोग का अभाव।

• कई अकादमिक और अनुसंधान विशेषज्ञों के दौरे में हवाई संपर्क नहीं होने के कारण बाधा।

• परिसर की अवस्थिति के कारण अतिथि प्राध्यापकों की अनुपस्थिति।

• अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय खेल सुविधाओं का अभाव।

• मजबूत और सक्रिय उद्योग-संस्थान संबंध/समन्वय की जरुरत..

• तकनीकी कर्मचारियों की सीमित संख्या।

अवसर:

• विश्वविद्यालय विकास के पथ पर अग्रसर है। यह शिक्षक, अधोसंरचना और विशाल परिसर के मामले में एक महत्वपूर्ण स्तर प्राप्त कर चुका है और एक विश्वस्तरीय संस्थान में बदलने की क्षमता रखता है।

• विश्वविद्यालय एक अनुसूची V क्षेत्र में स्थित है जो विश्वविद्यालय को इस तरह से समावेशिता पर जोर देने की सुविधा प्रदान करता है , जिससे कमजोर वर्गों के , विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में, शैक्षिक विकास को बढ़ावा मिलेगा ।

• विश्वविद्यालय ने उन क्षेत्रों में अकादमिक कार्यक्रम और अनुसंधान विकसित किए हैं जो मुख्य रूप से अंतरविषयक प्रकृति के हैं , और इसमें एक अनुकूल अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की क्षमता है जो नवीन विचारों को बढ़ावा देता है और पेटेंट की संख्या में वृद्धि के लिए योगदान देता है।

• विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ में स्थित है , जो एक तेजी से बढ़ता हुआ औद्योगीकृत राज्य है , जिसके पास प्राकृतिक संसाधन, अतिरिक्त बिजली , बिजली उत्पादन के बड़ी संख्या में भारी उद्योग , खनन एवं इस्पात क्षेत्र हैं। यह विभिन्न उद्योगों के सहयोग से कौशल-आधारित व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए मजबूत अकादमिक - उद्योग सम्पर्क को विकसित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

पिछले दो दशकों में, भारत में विभिन्न प्रकार की पर्यटन-आधारित गतिविधियाँ विकसित हुई हैं , जिसने पर्यावरण-पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन और सांस्कृतिक पर्यटन आदि में नए रास्ते खोले हैं। विश्वविद्यालय भारत के मध्य क्षेत्र में स्थित है, जो क्षेत्र की जरूरतों को पूरा करने वाले नए पाठ्यक्रम संचालित कर प्रशिक्षित मानव संसाधन विकसित करने के पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

हाल ही की महामारी ने हमें दिखाया है कि एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण और स्वस्थ जीवन शैली की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़, जहां विश्वविद्यालय स्थित है , की पहचान प्राकृतिक आवासों, जनजातीय बाहुल्य आबादी और प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों से घिरे हुए राज्य के रूप में है। मुख्य रूप से जनजातीय आबादी द्वारा अपनाई जाने वाली "लोकविद्या" परम्परा और संस्कृति का अब तक समुचित उपयोग नहीं हो पाया है और इसे एक व्यवस्थित ज्ञान में बदलने की आवश्यकता है। इसमें विकास के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करने के साथ-साथ एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता है। विश्वविद्यालय इस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने वाली अन्य एजेंसियों के सहयोग से इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम को लागू करने के प्रति गंभीर है।

विश्वविद्यालय के विधि शिक्षक , बिलासपुर स्थित राज्य उच्च न्यायालय के सहयोग से विधि वृत्तिकों की विशेषज्ञता और अनुभव का उपयोग करते हुए विधि-स्नातकों को गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण प्रदान करने , उनकी पेशेवर क्षमता, नियोजन के अवसरों और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

• आस-पास के जिलों की युवा आदिवासी आबादी आनुवंशिक रूप से अधिक पुष्ट है और खेल में अच्छे प्रदर्शन के लिए मानव शरीर के नाप की दृष्टि से उपयुक्त है। इस प्रकार, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति की खेल प्रतिभाओं के निर्माण के साथ-साथ योग और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार सहित समाज में खेल संस्कृति के प्रचार-प्रसार में उनकी क्षमता का उपयोग करने का पर्याप्त अवसर है।

• समय के साथ, विश्वविद्यालय ने विभिन्न विज्ञान, प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में कई शैक्षणिक पाठ्यक्रम विकसित किए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशा-निर्देशों के अनुसार, विश्वविद्यालय इन विभागों से महत्वपूर्ण मानव संसाधन विकसित करने की योजना बना रहा है। साथ ही सामाजिक चुनौतियों का अभिनव समाधान प्रस्तुत

करने के लिए अनुसंधानात्मक पहल करते हुए मानविकी से बहुविषयक समूह आधारित पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की योजना है।

• तेजी से आकार लेती अधोसंरचना और सुविधाओं के साथ राज्य में एक मात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय होने के नाते, शिक्षण, अनुसंधान, छात्र-शिक्षक विनिमय, प्रशिक्षण एवं परामर्श के लिए अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों, उद्योगों, सरकारी निकायों और गैर सरकारी संगठनों के साथ योजनाबद्ध गठबंधन और सहयोग स्थापित करने हेतु विश्वविद्यालय के लिए बहुत अच्छा अवसर है।

चुनौतियां:

• विश्वविद्यालय छात्रों के एक बड़े वर्ग को आकर्षित करता है, जिसमें सुदूर क्षेत्रों, सामाजिक और शैक्षणिक रुप से पिछड़े क्षेत्रों से आने वाले छात्र शामिल हैं। एक समान एवं सुसंगत शिक्षार्थियों के समूह के रुप में विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले छात्रों को आत्मसात करने एवं एकीकृत करने के लिए एक ऐसा क्षेत्र है जहां केंद्रित व एकाग्र प्रयासों की आवश्यकता है।
• शिक्षार्थियों के विविध समूह के लिए शिक्षा का एक व्यवहार्य माध्यम खोजना एक चुनौती है।
• संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करना एक बड़ी चुनौती है और ऐसे छात्रों को आकर्षित करने वाले अकादमिक पाठ्यक्रम (विदेशी भागीदारों के सहयोग से, यदि आवश्यक हो) तैयार करने के लिए उपयुक्त प्रयास किए जा रहे हैं।
• विश्वविद्यालय विकास के पथ पर अग्रसर है और शिक्षण विभाग और विश्वविद्यालय परिसर के विकास के लिए नई अधोसंरचना के निर्माण एवं मौजूदा अधोसंरचना को बनाए रखने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता है।
• मांग की आवश्यकता के अनुरुप नवीन शैक्षणिक पाठ्यक्रमों को तैयार करने और संचालित करने के लिए उपयुक्त अधोसंरचना और गुणवत्ता वाले मानव संसाधनों का विकास करना , जो रोजगार के पर्याप्त अवसर , स्टार्ट अप विकसित करने की संभावनाओं और 21वीं सदी के कौशल पर प्रमुखता से आधारित हो ।
• विश्वविद्यालय को शोध आधारित विश्वस्तरीय संस्थान में बदलने के लिए विभिन्न स्तरों पर वृहद नेटवर्किंग और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यावसायिक सहयोग की आवश्यकता है; जो एक चुनौती बनी हुई है।
• वर्तमान मांग परिदृश्य में, शैक्षणिक और वित्तीय स्वायत्तता, संस्थानों की सफलता की कुंजी है, इसलिए उत्तरदायित्व के साथ स्वायत्तता को विकसित करना और प्रोत्साहित करना एक चुनौती है।
• विशाल परिसर के रुप में विश्वविद्यालय के भावी विकास को देखते हुए , परिसर में रहने वालों के लिए स्कूल, उन्नत स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक सेवाओं, छोटे बाजार और बैंक और डाकघर जैसी आवश्यक सेवाओं के लिए पर्याप्त सुविधाओं और अधोसंरचना के विकास करते हुए इसे स्थापित एवं संधारित करने की आवश्यकता है।

योजना की मुख्य रणनीतियाँ

1. मिश्रित अधिगम और अकादमिक उत्कृष्टता: हाल की महामारी की स्थिति ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को विश्व स्तर पर बदल दिया। इसके अलावा , SWAYAM प्लेटफॉर्म पर MOOCs कार्यक्रम भी पिछले दो वर्षों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आकर्षक विशेषता बन गए हैं। यूजीसी ने सीखने के मिश्रित तरीके को लागू करने के लिए दिशा निर्देश और नियम भी जारी किए हैं। उपरोक्त के आलोक में , विश्वविद्यालय ने सीखने के मिश्रित तरीके को एक नए सामान्य मोड के रूप में अपनाया है।

2. हितधारकों के साथ जुड़ाव (उद्योग , समाज, सरकार): विश्वविद्यालय ने उद्योग, सरकार और समाज के साथ ज्ञान और विचारों के बहु-मार्गीय आदान-प्रदान के महत्व को स्वीकार किया है। विश्वविद्यालय की योजना उद्योग, समाज और सरकार के साथ इस तरह के संवाद को मजबूत करने की है , ताकि स्टार्ट-अप के अवसरों , अनुसंधान प्रायोजनों, व्यावहारिक प्रदर्शन और नीति संबंधी मुद्दों में विभिन्न हितधारकों की भागीदारी को सुदृढ़ किया जा सके।

3. प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएं: मिश्रित विधि को लागू करने के लिए ऑनलाइन विचार-विमर्श और डेटा साझा करने के लिए अधिगम, शिक्षण अधिगम तकनीकी एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। इ सीलिए विश्वविद्यालय, प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी और उनकी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा, ताकि वे सीखने के मिश्रित तरीके को अपनाने में सक्षम हो सकें।

4. विस्तार और सामुदायिक पहुँच सेवा: सभी पाठ्यक्रमों में स्नातक स्तर पर एनएसएस और एनसीसी को वैकल्पिक पाठ्यक्रम के रूप में रखा गया है। । इन्हें विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाएगा, ताकि छात्रों में राष्ट्रीय सेवा, विकास और देशभक्ति की भावना जगाई जा सके।

5. व्यावसायिक नेटवर्किंग और सहयोग: शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता में वृद्धि एवं सुदृढ़ीकरण के लिए विश्वविद्यालय, अन्य विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ सहयोग और शिक्षण और अनुसंधान गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए अतिथि प्राध्यापकों के आदान-प्रदान पर जोर देगा।

6. सामाजिक प्रासंगिकता के साथ प्रौद्योगिकी सक्षम अनुसंधान : विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, शोधार्थियों के एक महत्वपूर्ण समूह के गठन पर विचार कर रहा है। यह बहु-विषयक पारिस्थितिकी तंत्र में सार्थक अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ाएगा , जो विभिन्न प्रकार के अनुसंधान क्षेत्रों में वास्तविक जीवन की समस्याओं का स्थायी समाधान प्रदान कर सकता है और सामाजिक प्रभाव को बढ़ा सकता है। निम्नलिखित जीवन कौशल कार्यक्रमों और गतिविधियों को अनुसंधान समस्याओं के साथ एकीकृत किया जाएगा-

ए। समुदाय आधारित पुनर्वास।
बी। ग्रामीण क्षेत्रों में संवैधानिक मूल्यों का प्रसार।
सी। वैश्विक नागरिकता के लिए जागरूकता।
डी। साइबर कानूनों के बारे में आम लोगों के बीच प्रशिक्षण एवं शिक्षा।

7. उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण पर जोर: विश्वविद्यालय का लक्ष्य उपयुक्त अधोसंरचना, सामयिक शैक्षणिक कार्यक्रम और भारत शासन के विनियम के अनुरूप अंतरराष्ट्रीय छात्रों से संबंधित नीतियों में आवश्यक संशोधन है। इससे परिसर में अंतरराष्ट्रीय छात्रों का बेहतर प्रतिनिधित्व होगा।

8. शासन और एकीकरण: इस तरह के मॉडल को लागू करने पर जोर दिया जाएगा , जिससे दृष्टि, मिशन और शैक्षणिक योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन सम्भव होगा। मॉडल के प्रमुख बिंदु अधिकतम शैक्षणिक स्वायत्तता , जवाबदेही के साथ-साथ शासन के विकेंद्रीकृत प्रशासनिक मोड होंगे।

9. प्रचार और संचार: लक्षित संचार रणनीति के माध्यम से विश्वविद्यालय शिष्टजन, साझेदारों, छात्रों और पूर्व छात्रों के बीच अपना दृष्टि क्षेत्र बढ़ाना चाहेगा। विश्वविद्यालय उपयुक्तता और प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए स्वयं योग्य युक्त और नियमित मूल्यांकन अपनाना चाहेगा।

10.आत्म-विश्वास और निरन्तरता: शिक्षार्थियों के लिए वास्तविक जीवन के अनुभव के साथ विश्वविद्यालय शिक्षण अधिगम शिक्षा शास्त्र पर ध्यान केंद्रित कर रहा है ,ताकि वे अपने व्हाइल यू लर्न आदि जैसी योजनाओं के माध्यम से अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए पर्याप्त धन उत्पन्न कर सकें। विन्यास निधि प्रदान करने के लिए पूर्व छात्रों व प्रमुख सामाजिक समूहों से संपर्क किया जाएगा एवं परामर्श कार्यक्रम भी प्रारंभ किया जाएगा। *लोक-विद्या* (भारतीय पारंपरिक ज्ञान) जैसे स्थानीय जैव-उत्पाद, लोक चिकित्सा, कृषि अर्थव्यवस्था का पारंपरिक मॉडल, पारंपरिक गुरुकुल आधारित शिक्षा प्रणाली आदि को शिक्षण अधिगम की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए मौजूदा शैक्षणिक कार्यक्रम को उचित तरीके से मिश्रित किया गया।